बी.ए. प्रथम वर्ष
प्रबन्ध के सिद्धान्त (प्रथम प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय 1 : प्रबन्ध: अवधारणा, प्रकृति व महत्व

प्रबन्ध का आशय, प्रबन्ध की परिभाषा, प्रबन्ध की विशेषताएँ, प्रबन्ध के उद्देश्य, प्रबन्ध का महत्व, प्रशासन बनाम प्रबन्धन, प्रबन्धन: विज्ञान व कला के रूप में

अध्याय 2 : प्रबन्ध के क्रियात्मक क्षेत्र

हैनरी मिन्टजबर्ग के अनुसार प्रबन्धकीय भूमिकाएँ, प्रबन्ध के क्रियात्मक क्षेत्र, संगठन मे प्रबन्ध के उत्तरदायित्व, मैनेजमेन्ट के कार्य

अध्याय 3 : प्रबन्धकीय विचारधारा का विकास

प्रतिष्ठित शैली, वैज्ञनिक प्रबन्ध-सिद्धान्त, अफसरशाही प्रबन्धन-सिद्धान्त, प्रशासनिक प्रबन्धन, हैनरी फेयोल (थ्यारी आफ एडमिनिस्टेशन), सोशल सिस्टम एप्रोच, मानव-सम्बन्ध आदोलन, हॉथॉर्न प्रयोग, पीटर. एफ. ड्रकर, द मैनेजमेन्ट सांइस स्कूल, मैनेजमेन्ट थ्योरी में हालिया विकास, सिस्टम्स एप्रोच, प्रासंगिकता विचारधारा (Contingancy Approach), उत्कृष्ट कम्पनीज एप्रोच/7.5 फ्रेमवर्क

अध्याय 4 : नियोजन : अवधारणा, प्रक्रिया एवं प्रकार

नियोजन की विभिन्न अवधारणाएँ, नियोजन का आशय, परिभाषाएँ, विशेषताएँ, उद्देश्य, नियोजन के सिद्धान्त, प्रकृति, प्रक्रिया, नियोजन के भेद, नियोजन का महत्व, नियोजन का दोष, आदर्श योजना की विशेषताएँ

अध्याय 5 : निर्णयन

निर्णय लेने की प्रक्रिया क्या है? प्रबन्धकीय निर्णय करने के गुण, प्रबन्धकीय निर्णयों के प्रकार, निर्णय लेने के घटक, निर्णय लेना एक टेढ़ी-मेढ़ी प्रक्रिया है, निर्णय लेने की प्रक्रिया, निर्णयों के प्रकार, निर्णय लेने की तकनीक

अध्याय 6 : उद्देश्यों द्वारा प्रबन्धन

'उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध' का अर्थ, परिभाषाएँ, विशेषताएँ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध की प्रक्रिया, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध उपागम की पद्धति, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध के लाभ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध की सीमाएँ, उद्देश्यों द्वारा प्रबन्ध को प्रभावी बनाने के उपाय

अध्याय 7 : समामेलित नियोजन

समामेलित नियोजन का आशय, परिभाषाएँ, समामेलित नियोजन की विशेषताएँ, समामेलित नियोजन के प्रकार, लाभ, दोष

अध्याय 8 : वातावरण विश्लेषण एवं निदान

इतिहास एवं विकास, अर्थ एवं परिभाषा, महत्व, क्षेत्र एवं प्रकृति, प्रकार, अन्य विषयों से सम्बन्ध (व्यावसायिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने के सुझाव), विशेषताएँ, कार्य, उदाहरण

अध्याय 9 : रणनीति निरूपण

रणनीति निर्माण का आशय, रणनीति निर्माण के उपागम, वैकल्पिक रणनीतियाँ, सार्वजनिक रणनीतियाँ, बाह्य वृद्धि रणनीतियाँ, विलयन तथा अधिग्रहण व्यूहरचना की सफलता हेतु सुझाव, संयुक्त साहस व्यूहरचना

खण्ड - II

अध्याय 10 : संगठन

विकास, संगठन की परिभाषाएं, संगठन का अर्थ एवं प्रकृति, सिस्टमों के सिस्टम के रूप में संगठन, संगठन के चरण, संगठन के सिद्धान्त, संगठन का महत्व, औपचारिक संगठन, अनौपचारिक संगठन, औपचारिक तथा अनौपचारिक संगठन के भेद

अध्याय 11 : अधिकार एवं उत्तरदायित्व

अधिकार - आशय एवं परिभाषाएँ, अधिकार की विशेषताएँ, प्रकार, प्रबन्धन अधिकार के स्त्रोत अथवा सिद्धान्त, अधिकार प्रयोग की सीमाएँ, उत्तरदायित्व, विशेषताएँ, अधिकार व उत्तरदायित्व में भेद, प्रकार, उत्तरदायित्व का प्रत्योजन, अधिकार व उत्तरदायित्व में सम्बन्ध

अध्याय 12 : केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण

अधिकार का विकेन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण के लक्षण, विकेन्द्रीकरण की ओर ले जाने वाले फैक्टर, विकेन्द्रीकरण की सीमाएँ, डीसेन्ट्रलाइजेशन के लाभ, डीसेन्ट्रलाइजेशन से हानियाँ, स्वामित्व का केन्द्रीकरण, केन्द्रीकरण की विशेषताएँ, केन्द्रीकरण का महत्व व उसकी विशेषतायें, सेन्ट्रलाइजेशन के दोष, केन्द्रीकरण बनाम विकेन्द्रीकरण, सेन्ट्रलाइजेशन बनाम डीसेन्ट्रलाइजेशन, परिवर्तन-प्रबन्ध क्यों, क्या और कैसे, परिवर्तन का अर्थ एवं प्रकृति, चेन्ज मैनेजमेण्ट की परिभाषा, परिवर्तन को मैनेज करने का काम

अध्याय 13 : विभागीयकरण

आशय, विभागों को बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें, महत्व, विभागीय के आधार

अध्याय 14 : संगठन संरचना

संगठन संरचना का अर्थ? संगठन संरचना की परिभाषा, संरचना का महत्त्व, संगठन-संरचना तथा संस्कृति की भूमिका, संगठनात्मक संरचना के रूप, संगठन चार्ट, ऑर्गनाइजेशन चार्ट में सूचना , ऑर्गनाइजेशन स्ट्रक्चर का प्रस्तुतीकरण, ऑर्गनाइजेशन चार्ट के लाभ, ऑर्गनाइजेशन चार्ट की सीमाएँ, संरचना का निर्धारण, स्पैन ऑफ कन्ट्रोल, नियंत्रण का विस्तार को प्रभावित करने वाले कारक, संगठन-संरचना पर स्पैन ऑफ कन्ट्रोल का प्रभाव

खण्ड - III

अध्याय 15 : अभिप्रेरणा

परिभाषाएँ, अभिप्रेरणा की आवश्यकता एवं महत्व, अभिप्रेरणा तकनीक, अभिप्रेरक घटक, एक प्रोत्साहन के रूप में पैसा, अच्छे अभिप्रेरणा तंत्र की आवश्यकताएँ, अभिप्रेरणा सिद्धान्त

अध्याय 16 : नेतृत्व

नेतृत्व की परिभाषा और अर्थ, नेतृत्व बनाम प्रबन्धन, नेतृत्व तथा प्रबन्धन में अन्तर, नेतृत्व का महत्व, नेतृत्व की विशेषताएँ, नेतृत्व शैली, नेतृत्व के प्रति दृष्टिकोण, व्यावहारिकी सिद्धान्त, प्रबन्धकीय ग्रीड, अनिश्चय सिद्धान्त, हर्सी और बैंकार्ड का परिस्थिति संरचना मॉडल, पाथ गोल सिद्धान्त, परिवर्तनीय नेतृत्व

अध्याय 17 : संचार

संचार का आशय, संचार की परिभाषाएँ, संचार के तत्व, व्यावसायिक संचार के उद्देश्य, संचार का क्षेत्र, व्यावसायिक संचार के महत्व में वृद्धि के कारण, प्रबन्धकों के लिए संचार का महत्व, संचार प्रक्रिया का आशय, संचार प्रक्रिया के संघटक, प्रतिपुष्टि के तरीके, प्रतिपुष्टि का महत्व, प्रभावी प्रतिपुष्टि कौशल को विकसित करने हेतु सुझाव, आन्तरिक संचार, बाह्य संचार, संचार की दिशा, समतल अथवा क्षैतिज संचार, आरेखी या कर्णीय सम्प्रेषण, अन्तरवैयक्ति संचार, लिखित संचार, अमौखिक संचार, औपचारिक संचार, अनौपचारिक संचार, अंगूरीलता सम्प्रेषण, विभिन्न प्रकारों की बाधाएँ, संचार की बाधाएँ, बाधाओं को दूर करने हेतु सुझाव

खण्ड - IV

अध्याय 18 : प्रबन्धकीय नियंत्रण

नियन्त्रण की परिभाषा, महत्व, अच्छे नियंत्रण की विशेषताएँ, उद्देश्य, नियोजन एवं नियंत्रण में सम्बन्ध, नियंत्रण प्रक्रिया, तकनीकें

अध्याय 19 : परिवर्तन प्रबन्ध

परिवर्तन प्रबन्ध : आशय एवं परिभाषा, परिवर्तन का स्वभाव, प्रकार, परिवर्तन के प्रभाव, परिवर्तन के प्रतिरोध, प्रतिरोध के कारण, परिवर्तन के प्रतिरोध को हटाना

अध्याय 20 : प्रबन्ध के उभरते आयाम

नये आयामों/चुनौतियों के उभरने के कारण

व्यावसायिक पर्यावरण

(द्वितीय प्रश्नपत्र)

खण्ड - I

अध्याय -1 भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण अवधारणा, संघटक एवं महत्व

व्यावसायिक पर्यावरण : आशय एवं परिभाषाएँ, व्यावसायिक पर्यावरण के मुख्य लक्षण/प्रति, व्यावसायिक पर्यावरण का महत्व, व्यवसाय के आधार,व्यावसायिक पर्यावरण के संघटक, आर्थिक एवं अनार्थिक वातावरण में सम्बन्ध, भारतीय व्यावसायिक पर्यावरण, भारतीय प्रबन्धकों के समक्ष चुनौतियाँ, चुनौतियों का सामना करना , व्यावसायिक पर्यावरण की चुनौतियाँ तथा भारतीय अर्थव्यवस्था

अध्याय - 2 भारत में राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय का आशय एवं परिभाषाएँ, राष्ट्रीय आय का महत्व, राष्ट्रीय आय की धारणाएँ, भारत में राष्ट्रीय आय के मापन की विधियाँ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में कठिन इयाँ, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना में सुधार हेतु सुझाव, भारत में राष्ट्रीय आय की धीमी वृद्धि के कारण, भारत में राष्ट्रीय आय बढ़ाने हेतु सुझाव

अध्याय - 3 बचत तथा विनियोग

बचत का आशय, बचत की दर, भारत में बचत की प्रवृत्तियाँ, भारत में बचत के स्रोत, बचतों के निर्धारक तत्व, बचत दर निम्न होने के कारण, बचत में वृद्धि के लिए सुझाव,विनियोग (पूँजी निर्माण), बचत का विनियोग, पूँजी निर्माण के घटक, भारत में विनियोग की प्रवृत्तियाँ अथवा भारत में पूँजी निर्माण, भारत में पूँजी निर्माण कम होने केकारण, भारत में पूँजी निर्माण के प्रोत्साहन हेतु सुझाव,

अध्याय - 4 भारतीय उद्योग : सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र

सार्वजनिक क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र की विशेषताएँ, सार्वजनिक उपक्रमों की आवश्यकतासार्वजनिक उपक्रमों का औचित्य, भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का विकास, सार्वजनिक क्षेत्र की उपाधियाँ अथवा निष्पादकता, सार्वजनिक क्षेत्र की न्यून निष्पादकता के कारण सार्वजनिक क्षेत्र की निष्पादकता में सुधार हेतु सुझाव, नवीन औद्योगिक नीति 1991 तथा सार्वजनिक क्षेत्र, नवरत्न, सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश, सार्वजनिक उपक्रमों में विनिवेश का औचित्य, विनिवेश आयोग, निजी क्षेत्र आशय एवं विशेषताएँ, निजी क्षेत्र का महत्व, निजी क्षेत्र का महत्व, भारत में निजी क्षेत्र की संरचना, निजी क्षेत्र की उपलब्धियां, निजी क्षेत्र के दोष, निजी क्षेत्र के सुधार हेतु सरकारी प्रयास, निजी क्षेत्र को प्रभावी बनाने के सुझाव, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के मध्य समन्वय, सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्र में अन्तर

अध्याय - 5 भारत में विदेशी व्यापार

भारत के विदेशी व्यापार की संरचना, भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा, भारत के विदेशी व्यापार की दशा, भारत के विदेशी व्यापार की नवीनतम प्रवृत्तियाँ

अध्याय - 6 भुगतान सन्तुलन

आशय एवं परिभाषाएँ, विशेषताएँ, भुगतान सन्तुलन की मदें, भुगतान सन्तुलन का महत्व, भुगतान सन्तुलन में असंतुलन, भुगतान सन्तुलन की असाम्यता के कारण, भुगतान सन्तुलन के समाधान हेतु उठाए गए कदम, भुगतान सन्तुलन की असाम्यता को दूर करने हेतु सुझाव, भारत के भुगतान सन्तुलन की स्थिति

अध्याय - 7 भारत में मुद्रा

अध्ययन के उद्देश्य, मुद्रा का आशय एवं परिभाषाएँ, मुद्रा की माँग, मुद्रा की माँग को प्रभावित करने वाले तत्व, मुद्रा की पूर्ति, मुद्रा की पूर्ति की बहिष्कृत मदें, मुद्रा की पूर्ति के स्कन्ध तथा प्रवाह में अन्तर, मुद्रा पूर्ति के माप क, मुद्रा पूर्ति के निर्धारक तत्व, उच्च-शक्ति मुद्रा

अध्याय - 8 भारत में वित्त

वित्त का आशय, भारतीय वित्तीय प्रणाली की संरचना, विनियामक संस्थाएँ, वित्तीय बाजार

अध्याय - 9 भारत में कीमतें

कीमत प्रवृत्तियाँ : आयोजन काल में, मूल्य वृद्धि के कारण, कीमतों में वृद्धि के प्रभाव,सरकार द्वारा कीमत नियं त्रण की दिशा में किए गए प्रयास, मूल्य वृद्धि रोकने हेतु सुझाव

खण्ड - II

अध्याय - 10 आर्थिक संवृद्धि की विभिन्न समस्याएँ

अध्ययन के उद्देश्य, आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास तथा आर्थिक प्रगति, आर्थिक विकास तथा आर्थिक विकास संवृद्धि में भेद, आर्थिक विकास के अभिसूचक, भारत मेंआर्थिक विकास की समस्याएँ

अध्याय - 11 भारत में बेरोजगारी

बेरोजगारी का आशय, बेरोजगारी के प्रकार, भारत में बेरोजगारी की सीमा (1993-94 तक), बेरोजगारी अनुमान (1993-94 के बाद), देश में रोजगार कार्यालयों में पंजीकृतबेरोजगारी का विवरण, कुल रोजगार और संगठित क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार, बेरोजगारीके प्रभाव, बेरोजगारी के कारण, बेरोजगारी मिटाने के उपाय, रोजगार हेतु सरकारी उपाय,

अध्याय - 12 निर्धनता

अध्ययन के उद्देश्य, निर्धनता, गरीबी रेखा का अभिप्राय, निर्धनता के कारण, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम, निर्धनता निवारण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, निर्धनता दूर करने हेतु सुझाव

अध्याय - 13 क्षेत्रीय असन्तुलन

क्षेत्रीय असन्तुलन का आशय, क्षेत्रीय असन्तुलन के सूचक, क्षेत्रीयअसन्तुलन के कारणक्षेत्रीय असन्तुलनों का प्रभाव, सरकार द्वारा संतुलित क्षेत्रीय विकास हेतु उठाए गए कदम, क्षेत्रीय असन्तुलन को दूर करने के उपाय अथवा भारत में, सन्तुलित क्षेत्रीय विकास हेतु सुझाव

अध्याय - 14 सामाजिक अन्याय

सामाजिक अन्याय का आशय, सामाजिक अन्याय समाप्त करने के प्रयास, आर्थिक विकास तथा सामाजिक अन्याय, सामाजिक न्यायमुक्त विकास में कठिनाइयाँ, सामाजिक न्यायमुक्त आर्थिक विकास हेतु सुझाव

अध्याय - 15 मुद्रा-स्फीति अथवा मुद्रा-प्रसार

मुद्रा प्रसार का आशय, मुद्रा प्रसार की परिभाषाएँ, मुद्रा प्रसार की विशेषताएँ, मुद्रा प्रसार के प्रकार, मुद्रा प्रसार की तीव्रता (गति), मुद्रा प्रसार के कारण, मुद्रा प्रसार के प्रभाव, मुद्रा प्रसार को रोकने के उपाय, मुद्रा-स्फीति और आर्थिक विकास, मुद्रा- स्फीति के विरुद्ध सरकारी नीति

अध्याय - 16 समानान्तर अर्थव्यवस्था अथवा काला धन

समानान्तर अर्थव्यवस्था का आशय, काले धन का आशय एवं प्रकृति, भारत में काले धन का उद्‌भव तथा श्रोत, समानान्तर अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति के कारण, समानान्तर अर्थव्यवस्था के दुष्प्रभाव, समानान्तर अर्थव्यवस्था को रोकने हेतु उठाए गए कदम, समानान्तर अर्थव्यवस्था की समस्या के सुधार के लिए सुझाव

अध्याय - 17 औद्योगिक रुग्णता

औद्योगिक रुग्णता की परिभाषाएँ, औद्योगिक रुग्णता के कारण, औद्योगिक रुग्णता के प्रतीक, औद्योगिक रुग्णता के परिणाम, औद्योगिक रुग्णता रोकने हेतु उपाय, सरकार की नीति, औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्संस्थापन बोर्ड, औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्संरचना बोर्ड के कार्य

खण्ड - III

अध्याय - 18 सरकार की भूमिका

व्यवसाय में सरकार की भूमिका, सरकार की बदलती हुई भूमिका,

अध्याय - 19 मौद्रिक नीति

मौद्रिक नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, मौद्रिक नीति के उद्देश्य, मौद्रिक नीति के प्रकार, मौद्रिक नीति का महत्व, उदारीकरण से पूर्व मौद्रिक नीति, आर्थिक सुधारों के पश्चात मौद्रिक नीति

अध्याय - 20 राजकोषीय नीति

राजकोषीय नीति का आशय एवं परिभाषाएँ, राजकोषीय नीति की विशेषताएँ, राजकोषीय नीति के उद्देश्य, राज कोषीय नीति के संघटक, भारत में राजकोषीय नीति, भारतीय राजकोषीय नीति के प्रभाव, भारतीय राजकोषीय नीति की कमियाँ, भारतीय राजकोषीय नीति में सुधार हेतु सुझाव

अध्याय - 21 औद्योगिक नीति

औद्योगिक नीति का आशय, भारत की औद्योगिक नीति, औद्योगिक नीति 1991, औद्योगिक नीति 1991 के उद्देश्य, औद्योगिक नीति 1991 की बातें, औद्योगिक नीति 1991 के गुण, औद्योगिक नीति 1991 की कमियाँ

अध्याय - 22 औद्योगिक लाइसेन्सिंग

औद्योगिक लाइसेन्स का आशय, उद्देश्य, कानूनी आधार, उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम, 1951, लाइसेन्स नीति, 1991 तथा उद्योग विकास एवं नियमन अधिनियम, नई औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति, औद्योगिक लाइसेन्सिंग नीति 1991 की प्रमुख विशेषताएँ, लाइसेन्स प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव

अध्याय - 23 निजीकरण

निजीकरण, निजीकरण की विशेषताएँ, निजीकरण के उद्देश्य, निजीकरण के लिए अपनायी जाने वाली तकनीकें /विधियाँ, निजीकरण के लाभ, निजीकरण के दोष, भारत में निजीकरण, भारत में निजीकरण को प्रेरित करने वा ले कारक, उदारीकरण का आशयउदारीकरण के उद्देश्य, उदारीकरण के उपाय या तरीके, वैश्वीकरण का आशय , वैश्वीकरण के अंग, वैश्वीकरण की विशेषताएँ, भारत में वैश्वीकरण को प्रेरित करने वाले कारण, वैश्वीकरण ा का महत्व, वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव, भारतीय अर्थव्यवस्था कावैश्वीकरण

अध्याय - 24 अवमूल्यन

अवमूल्यन का अर्थ एवं परिभाषा, अवमूल्यन के कारण, अवमूल्यन के उद्देश्य, अवमूल्यन की सफलता के लिए आवश्यक दशाएँ, अवमूल्यन प्रभाव

अध्याय - 25 निर्यात-आयात नीति

निर्यात-आयात नीति का आशय, निर्यात-आयात नीति का महत्व, निर्यात-आयात नीति के प्रकार, नवीन निर्यात-आयात नीति

अध्याय - 26 विदेशी विनियोग का नियमन तथा विदेशी सहयोग

अध्ययन के उद्देश्य, विदेशी विनिमय प्रबन्धन अधिनियम 2000, फेरा व फेमा में अन्तरफेमा के प्रमुख प्रावधान, विदेशी निवेश के प्रकार, विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी प्रयास, नई औद्योगिक नीति तथा विदेशी तकनीकी ठहराव, विदेशी सहयोग के दोष, आर्थिक विकास में विदेशी पूँजी व सहयोग की भूमिका, भारत में विदेशी पूँजी की समस्याएँ, सुझाव

अध्याय - 27 पंचवर्षीय योजनाएँ

दृष्टि तथा युक्ति, ग्यारहवीं योजना के प्रमुख लक्ष्य, समष्टि आर्थिक रूपरेखा, ग्यारहवींपंचवर्षीय योजना की वित्तीय संरचना, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में विभिन्न क्षेत्रों का सार्वजनिक क्षेत्र परिव्यय, रोजगार परिप्रेक्ष्य, खण्डीय नीतियाँ, बारहवीं पंचवर्षीय योजना, बारहवीं पंचवर्षीय योजना में संसाध्नों का आवंटन, वित्त व्यवस्था, आधरिक संरचना निवेश, रणनीति, योजना की मुख्य बातें

खण्ड - IV

अध्याय - 28 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण, विश्व व्यापार की प्रवृत्तियाँ तथा विकासशील देशों की समस्याएँ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण आशय एवं परिदृश्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक वातावरण केपरिवर्तनशील आयाम, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक पर्यावरण तथा भारत, विश्व व्यापार प्रवृत्तियाँ, निर्यात व्यापार की संरचना, विश्व का आयात-व्यापार, विकासशील देशों कीविदेशी व्यापार सम्बन्धी समस्याएँ

अध्याय - 29 विदेशी व्यापार एवं आर्थिक संवृद्धि

विदेशी व्यापार का आशय एवं परिभाषाएँ, विदेशी व्यापार की आवश्यकता एवं महत्व, विदेशी व्यापार की हानि याँ

अध्याय - 30 अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह

अध्ययन के उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक समूह का आशय, यूरोपियन साझा बाजार, यूरोपियन साझा बाजार तथा भारत, यूरोपियन मुक्त व्यापार क्षेत्र, एशिया प्रशान्त आर्थिक सहयोग, उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार ठहराव, दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संघ, हिन्द महासागर तट क्षेत्रीय सहयोग

अध्याय - 31व्यापार एवं प्रशुल्क विषयक सामान्य ठहराव (गैट) तथा विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू० टी० ओ०)

गैट, गैट के उद्देश्य, गैट के सिद्धान्त, गैट के विभिन्न दौर, गैट की उपलब्धियाँ, गैट की असफलताएँ, गैट तथा भारत, विश्व व्यापार संगठन, कार्य, उद्देश्य, गैट व विश्व व्यापार संगठन में अन्तर, संगठन एवं प्रबन्ध, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि, बौद्धिक सम्पदा अधिकार सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारत

अध्याय - 32 विश्व बैंक

विश्व बैंक क्या है, विश्व बैंक के उद्देश्य, विश्व बैंक का प्रबन्ध एवं संगठन, पूँजी, विश्व बैंक की सदस्यता, विश्व बैंक के कार्य, विश्व बैंक की कार्यप्रणाली, विश्व बैंककी सफलताएँ या उपलब्धियाँ, असफलताएँ, विश्व बैंक तथा भारत

अध्याय - 33 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के उद्देश्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के कार्य, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का संगठन, प्रबन्ध एवं मताधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सदस्यता, पूँजी तथा अभ्यंश, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का प्रचालन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विकाशील देश, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा भारत

अध्याय - 34 विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश क्या है?, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं भारत, भारत के विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में कुछ प्रमुख देशों का भाग, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए उठाए गए कदम, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अन्त र्प्रवाह, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का उद्योगानुसार अन्तर्प्रवाह, सारांश, महत्वपूर्ण शब्दावली, अभ्यास प्रश्न।

अध्याय - 35 प्रति व्यापार

प्रति व्यापार का आशय, प्रति व्यापार की तकनीकें, प्रति व्यापार तथा भारत